Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-1, June-2021
www.researchguru.net

'गोपालानंदजी स्वामीजी कृत वार्ताएँ'

रावल विरांगकुमार नरेन्द्रभाई

पीएच.डी. छात्र, संस्कृत विभाग, महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर युनिवर्सिटी, भावनगर,

संपर्कसूत्र-९९०९४४४०९

स्वामिनारायण संप्रदायने भारतीय संस्कृति हिंदूधर्म, कला-जगत एवं साहित्य में अपना अनूठा योगदान दिया है। विश्व के कई देशों मेंस्वामिनारायण संप्रदाय ने अपने प्रचार-प्रसार से भारतीय संस्कृति की भव्यता और दिव्यता को विश्व के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास आज हम देख सकते हैं। धर्म सिद्धांतों की विशिष्ट प्रणाली के साथ स्वामिनारायण संप्रदाय ने साहित्य सृजन में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया है।

स्वामिनारायण संप्रदाय के आद्यस्थापक सहजानंदस्वामी की प्रेरणा एवं आज्ञा से स्वामीनारायण संप्रदाय में त्यागी और सांसारिक अनुयायियों ने साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। स्वयं सहजानंदस्वामी और उनके नंदसंतों ने विपुल प्रमाण में साहित्य का सृजन किया है। संस्कृत, हिंदी, गुजराती जैसी भारतीय भाषाओं के साथ अब अंग्रेजी में भी साहित्य का सर्जन हो रहा है। 'शिक्षापत्री, 'सत्संगीजीवन', 'सत्संगीभूषण' जैसे ग्रंथ का स्थान संप्रदाय के प्रमुख ग्रंथों में है, जो संस्कृत भाषा में है। प्रेमानंद आदि कवियों ने हिंदी भाषा में साहित्य सृजन किया है। गोपालानंद, ब्रह्मानंद, मुक्तानंद आदि रचनाकारों ने गुजराती भाषा में साहित्य सर्जन किया है।

एक भाषा में रचित साहित्य का दूसरी भाषा में आस्वादन करने के लिए अनुदित रचनाएँ स्वामिनारायण संप्रदाय में मिलती है। आज शिक्षापत्री का आंग्लभाषा में अनुवाद भी मिलता है। भारतीय भाषाओं के साहित्य में संस्कृत भाषा की अनुदित कृतियाँ मिलती है, परंतु यहाँ पर अन्य भाषा मैं से संस्कृत मैं अनूदित रचनाएँ भी प्राप्त होती है। धार्मिक संप्रदाय में संस्कृत भाषा का विशेष महत्व है। अतः यहाँ पर अन्य भाषा में से संस्कृत में भाषांतरित साहित्य भी है। 'गोपालानंदजी स्वामीजी कृत वार्ताएँ', 'गुनातीतानंद स्वामी की वार्ताएँ' जैसी रचनाएँ गुजराती भाषा में से संस्कृत और हिन्दी में अनूदित हुई है।

➢ 'गोपालानंदजी स्वामीजी कृत वार्ताएँ'

सद्गुरु गोपालानंद स्वामी के व्याख्यानो में की गई बातें 'गोपालानंद स्वामीनी वातो' नाम से गुजराती भाषा में स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रसिद्ध ग्रंथ है। गुजराती भाषा में से संस्कृत और हिंदी में अनूदित इस ग्रंथ में गोपालानंद स्वामी के उपदेश वर्णित है।

गुजराती भाषा में गोपालानंद स्वामी ने कहीं बातों को उनके शिष्य स्वामी महापुरुषदासजी तथा उनके शिष्य स्वामी रघुनाथचरणदासजी ने जो संग्रह किया था; उसमें से पंडित श्रीकृष्ण वल्लभाचार्य ने इसकी रचना की है। जूनागढ़ के ब्रह्मचारी बालकृष्णानंदजी ने इसे प्रकाशित किया था। सद्गुरु गोपालानंद स्वामीने श्रीजीमहाराज के अभिप्राय को हृदयस्थ

करके उपदेशात्मक वाणी में एकांतिक धर्म, ब्रह्म प्राप्ति, श्रीजी महाराज का सर्वोपरिरूप, पंचविषय में से निवृत्ति, वैराग्य, नियम-धर्म तथा ऐकांतिक भक्ति का निरूपण किया है।

स्वामिनरायण संप्रदाय के प्रथम पंक्ति के संत-गोपालानंद स्वामी का स्थानसंप्रदाय में आदरपात्र है। जग प्रसिद्ध स्वामीनारायण संप्रदाय के सारंगपुर हनुमानजी मंदिर के इतिहास में गोपालानंदस्वामी का नाम अविनाभाव से जुड़ा हुआ है। ऐसे महान योगी पुरुष की उपदेश वाणी इस ग्रंथ में अनूदित की गई है।

तीनप्रकरण में विभक्त गोपालानंद स्वामी की बातें सुंदर रूप से प्रस्तुत हुई है। प्रथम प्रकरण में भगवान की महिमा को समझने की पद्धति का वर्णन है। उसमें २६१६ श्लोकों में ३४२ बातों को अनुदित की गई है। दूसरे प्रकरण में भगवान के निश्चय को समझने की पद्धति का वर्णन है। उसमें १३० बातों को १०९५ श्लोकों में भाषांतरित किया गया है। तीसरे प्रकरण में भक्त तथा भगवान को जानने की पद्धति का विस्तार है। जिसमें १०७७ श्लोकों में ५२ बातों को वर्णित किया गया है।

तीनों प्रकरण के बाद परिशिष्ट विभाग है। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय परिशिष्ट में गोपालानंद स्वामी कथित दृष्टांतो का पादटीप तुल्य विवेचन है। उसमें स्वामीनारायण भगवान के अंगों में स्थित चिह्नों के आधार पर शास्त्र प्रमाण से वे स्वयं परमात्मा है, उस बात का प्रतिपादन किया गया है। इसमें परमात्मा स्वरुप की सुंदर चर्चा की गई है।

चतुर्थ परिशिष्ट में गोपालानंदस्वामी के जीवनचरित्र को संस्कृतभाषा में अनुवादित किया गया है। ब्रह्मचारी बालकृष्णानंदजी ने गुजराती भाषा में गोपालानंदस्वामी का जीवनवृतांत लिखा था, उसका यहां पर अनुवाद किया गया है। गोपालानंदस्वामी का जन्म, बचपन, सन्यासजीवन, साहित्यचर्या आदि का वर्णन है।

पंचम पादटीप में श्री कृष्णवल्लभाचार्यजी ने गोपालानंदस्वामी के स्तोत्र की सुंदर रचनाकी है, उसका प्रकाशन यहां पर है-

यःश्रीगोपालकृष्णप्रभवगुणनिधिर्धेनुधामेशरुपो,यो वा
साहस्त्रभोगात्मगनिरवधिसत्सर्वयोगाऽधिवासः।
यन्मूर्तौ ब्रह्मधामाऽधिपकृतवसर्तिर्भूरिश्रृंगा अरयासो, गावों यद्वर्ष्मगास्तं पुरुषतनुस्वागिवर्यं नमामि ।।

पादटीप और तृतीय प्रकरण के बीच भी अवतारों, लक्ष्मीजी के चरणों आदि का वर्णन किया गया है। इस अनुवाद का कार्य विक्रम संवत २०१५ में किया गया था। प्रस्तुत अनुवाद ग्रंथ में हिंदी और संस्कृत दोनों भाषाओं का अनुवाद सम्मिलित है, फिर भी अनुवादक ने यहां पर ग्रंथ का शीर्षक हिंदी भाषा में ही रखा है।

स्वामीनारायण संप्रदाय मैं गोपालानंद स्वामीने उनकी अद्भुत शक्तियों से अनेक रचनात्मक कार्य किए हैं। गोपालानंद स्वामी की अद्भुत बातों को संस्कृत भाषा के श्लोकों में विशिष्ट रूप से प्रस्तुत करके संस्कृत भाषा एवं हिंदी भाषा में भाषांतर किया गया है। श्री कृष्ण वल्लभाचार्यजी ने श्री गोपालानंद

स्वामी के स्तोत्र की रचना करके उनका भक्तिमय अभिवादन किया है। हिंदी एवं संस्कृत भाषा की विशेषताओं से भरपूर यह ग्रंथ अद्भुत है।

- **संदर्भग्रंथ**

➢ गोपालानंदजी स्वामीजीकृत वार्ताएँ, श्री कृष्णवल्लभाचार्यजी,प्रका० श्री स्वामीनारायण मंदिर जूनागढ़,संवत २०२३

➢ सदगुरु श्री गोपालानंद स्वामी नी वातो(गुजराती), प्रका०श्री स्वामीनारायण गादी संस्थान मणिनगर,१९९१

➢ श्रीमद् सत्संगिजीवन, प्रका०श्री स्वामीनारायण मंदिर- सरधार, संवत २०७२